771

M.A. (Previous) Examination, 2022

हिन्दी साहित्य

Paper-IV
(Compulsory Paper)

हिन्दी गद्य (उपन्यास, कहानी एवं अन्य गद्य विधाएँ)

Time Allowed : **3 Hours**

Maximum Marks : **100/ 80**

For Non Collegiate : **100**

For Regular - **80**

Note : (1) *No supplementary answer-book will be given to any candidate Hence the candidates should write the answer precisely in the main answer-book only.*

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर-पुस्तिका नहीं दी जायेगी । अतः परीक्षार्थियों को चाहिये कि वे मुख्य उत्तर-पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखें ।

(2) All the parts of one question should be answered at one place in the answer-book. One complete question should not be answered at different places in the answer-book.

किसी भी एक प्रश्न के अंतर्गत पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के उत्तर, उत्तर-पुस्तिका में अलग-अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर हल करें ।

https://www.pdusuonline.com

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए । प्रत्येक प्रश्न का अंक भार उसके सामने अंकित है ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(स्वयंपाठी : 10 × 4 = 40 / नियमित : 8 × 4 = 32)

(क) किसान पक्का स्वार्थी होता है, इसमें संदेह नहीं । उसकी गाँठ से रिश्वत के पैसे बड़ी मुश्किल से निकलते हैं, भाव-ताव में भी वह चौकस होता है, ब्याज की एक-एक पाई छुड़ाने के लिए वह महाजन की घंटों चिरौरी करता है, जब तक पक्का विश्वास न हो जाय, वह किसी के फुसलाने में नहीं आता, लेकिन उसका संपूर्ण जीवन प्रकृति से स्थायी सहयोग है ।

अथवा

सिलिया ने उस पक्षी की भाँति, जिसे मालिक ने पर काटकर पिंजरे से निकाल दिया हो, मातादीन की ओर देखा । उस चितवन में वेदना अधिक थी या भर्त्सना, यह कहना कठिन है । पर उसी पक्षी की भाँति उसका मन फड़फड़ा रहा था और ऊँची डाल पर उन्मुक्त वायुमंडल में उड़ने की शक्ति न पाकर उसी पिंजरे में जा बैठना चाहता था, चाहे उसे बेदाना, बेपानी, पिंजरे की तीलियों से सिर टकरा कर मर ही क्यों न जाना पड़े । https://www.pdusuonline.com

(ख) लोक कल्याण प्रधान वस्तु है । जिससे सधता हो, वही सत्य है । आचार्य आर्यदेव ने सबसे बड़े सत्य को भी सर्वत्र बोलने का निषेध किया है । औषध के समान अनुचित स्थान पर प्रयुक्त होने पर सत्य भी विष हो जाता है । हमारी समाज व्यवस्था ही ऐसी है कि उसमें सत्य अधिकतर स्थानों में विष का काम करता है ।

अथवा

मनुष्य जितना देता है, उतना ही पाता है । प्राण देने से प्राण मिलता है । मन देने से मन मिलता है । आत्मदान ऐसी वस्तु है, जो दाता और गृहीता दोनों को सार्थक करती है । राज्यश्री ने वह दान दिया भी था और पाया भी था । लौकिक मानदण्ड से आनन्द नामक वस्तु को नहीं नापा जा सकता । दुःख तो केवल मन का विकल्प ही है, मनुष्य तो नीचे से ऊपर तक केवल परमानन्द स्वरूप है ।

https://www.pdusuonline.com

(ग) वास्तव में जीवन सौन्दर्य की आत्मा है; पर वह सामंजस्य की रेखाओं में जितनी मूर्तिमत्ता पाता है, उतनी विषमता में नहीं। जैसे – जैसे हम बाह्य रूपों की विविधता में उलझते जाते हैं, वैसे-वैसे उनके मूलगत जीवन को भूलते जाते हैं। बालक स्थूल विविधता से विशेष परिचित नहीं होता, इसी से वह केवल जीवन को पहचानता है। जहाँ जीवन से स्नेह-सद्भाव की किरणें फूटती जान पड़ती हैं, वहाँ वह व्यक्ति विषम रेखाओं की उपेक्षा कर डालता है और जहाँ द्वेष, घृणा आदि के धूम से जीवन ढका रहता है, वहाँ वह सामंजस्य को भी ग्रहण नहीं करता।

अथवा

स्त्री की आत्मा में उसकी मर्यादा की जो सीमा अंकित रहती है, वह समाज के मूल्य से बहुत अधिक गुरु और निश्चित है, इसी से संसार भर का समर्थन पाकर जीवन का सौदा करने वाली नारी के हृदय में भी सतीत्व जीवित रह सकता है और समाज भर के निषेध से घिरकर धर्म का व्यवसाय करने वाली सती की साँसें भी तिल-तिल करके असती के निर्माण में लगी रह सकती है।

(घ) चन्दर को *लगा, जिन्दगी* के पच्चीस साल वह उन गाइडों के साथ खण्डहरों में बिताकर आया है जिनकी जीवन्त कथाओं को वह कभी नहीं जान पाया, सिर्फ दीवाने-खास उसे दिखाया गया, नक्काशी दिखायी गयी और जनाने हमाम में घुमाकर गाइड ने उसे फाँसी वाले अँधेरे और बदबूदार कमरे में छोड़ दिया, जहाँ चमगादड़ लटके हुए बिलबिला रहे हैं और एक बहुत पुरानी ऐतिहासिक रस्सी लटक रही है, जिसका फन्दा गरदन में कस जाता है और आदमी झूल जाता है और उसके बाद अन्धे कुएँ में फेंकी गयी सिर्फ वे लाशें रह जाती हैं।

अथवा

क्या सचमुच इन्सान पहले की ज़िन्दगी को मिटाकर नये सिरे से ज़िन्दगी आरम्भ कर सकता है ? क्या सचमुच ज़िन्दगी के कुछ वर्षों को एक दुःस्वप्न की तरह भूलने का प्रयत्न किया जा सकता है ? बहुत-से इन्सान हैं जिनकी ज़िन्दगी कहीं-न-कहीं किसी-न-किसी दोराहे से ग़लत दिशा की ओर भटक जाती है। क्या यही उचित नहीं कि इन्सान उस रास्ते को बदलकर अपनी गलती सुधार ले? आखिर इन्सान को जीने के लिए एक ही जीवन तो मिलता है – वही प्रयोग के लिए और वही जीने के लिए।

https://www.pdusuonline.com

2. 'गोदान' उपन्यास के महाकाव्यत्व को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (स्वयंपाठी : 15 अंक/नियमित – 12 अंक)

अथवा

होरी की चारित्रिक विशेषताओं का सोदाहरण वर्णन कीजिए। (स्वयंपाठी : 15 अंक/नियमित – 12 अंक)

3. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' भारतीय उपन्यास का एक विशिष्ट प्रकार माना जा सकता है। कथन की विस्तृत विवेचना कीजिए। (स्वयंपाठी : 15 अंक/नियमित – 12 अंक)

अथवा

"निपुणिका स्त्री जाति का श्रृंगार थी, सतीत्व की मर्यादा थी, हमारी जैसी उन्मार्ग गामिनी नारियों की मार्गदर्शिका थीं।" चारुस्मिता के इस कथन की समीक्षा करते हुए निपुणिका के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

(स्वयंपाठी : 15 अंक/नियमित – 12 अंक)

4. 'अतीत के चलचित्र' संग्रह में प्रस्तुत प्रमुख स्त्री पात्रों के आधार पर महादेवी वर्मा की नारी भावना को स्पष्ट कीजिए। (स्वयंपाठी : 15 अंक/नियमित – 12 अंक)

अथवा

'बिन्दा' की चारित्रिक विशेषताएँ बताते हुए कृति की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

(स्वयंपाठी : 15 अंक/नियमित – 12 अंक)

5. 'प्रेत –मुक्ति' कहानी की प्रतीकात्मकता का उद्घाटन करते हुए इसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

(स्वयंपाठी : 15 अंक/नियमित – 12 अंक)

अथवा

'अमृतसर आ गया' कहानी में काल और परिस्थिति के अनुसार पात्रों के मनोभावों में होनेवाले बदलाव को कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

(स्वयंपाठी : 15 अंक/नियमित – 12 अंक)

https://www.pdusuonline.com